भाकृअनुप-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, क्षेत्रीय केंद्र श्रीनगर

भाकृअनुप-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र श्रीनगर की स्थापना 1988 में जम्मू और कश्मीर के साथ-साथ लद्दाख क्षेत्र से कृषि-बागवानी फसलों और उनके CWR की खोज और जर्मप्लाज्म संग्रह और उनके लक्षण वर्णन और मूल्यांकन की जिम्मेदारी के साथ की गई थी। श्रीनगर शहर से लगभग 14 किलोमीटर दूर केडी फार्म, ओल्ड एयरफील्ड, रंगरेथ-191132 पर इसका दस एकड़ का Farm है। स्टेशन ICAR-CITH श्रीनगर के निकट स्थित है।

स्टेशन का जनादेश और उद्देश्य :

- कृषि-बागवानी फसलों के CWR सहित स्थानीय पादप आनुवंशिक संसाधनों की खोज और संग्रह।
- स्थानीय फसल आनुवंशिक संसाधनों का लक्षण वर्णन, मूल्यांकन, प्रलेखन और संरक्षण।
- अनुसंधान उद्देश्य के लिए देश के मांगकर्ताओं को जननद्रव्य की आपूर्ति करना।
- Farm में स्थानीय फसलों की विविधता बनाए रखना।
- पादप आनुवंशिक संसाधनों के बारे में जन जागरूकता पैदा करना और उनके उपयोग को बढ़ावा देना।

वर्तमान में क्षेत्रीय केंद्र श्रीनगर की प्राथमिकता जम्मू कश्मीर और लद्दाख के दूर दराज और ऊंचाई वाले क्षेत्रों से कृषि-बागवानी फसलों की जर्मप्लाज्म विशेष रूप से CWR की खोज और संग्रह है। इस समय श्रीनगर स्टेशन पर दो वैज्ञानिक कार्यरत हैं। स्टेशन पर किसी अन्य प्रकार का नियमित कर्मचारी नहीं है। चूँकि क्षेत्रीय केंद्र पर केवल दो स्टाफ सदस्य हैं, इसलिए यह स्टेशन ICAR-CITH श्रीनगर द्वारा आयोजित राजभाषा गतिविधिओं और हिन्दी कार्यशालाओं/प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान इस स्टेशन के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुशील कुमार रैना को इन आयोजनों में पुरस्कृत किया गया है:

- निबंध लेखन प्रतियोगिता 2019 में तीसरा पुरस्कार
- अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता 2019 में तीसरा पुरस्कार
- हिंदी निबंध प्रतियोगिता 2021 में प्रथम पुरस्कार

माखनलाल चतुर्वेदी

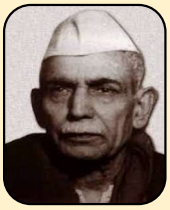

माखनलाल चतुर्वेदी (4 अप्रैल 1889- 30 जनवरी 1968) भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ कर बाहर आए। इसके लिये उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। वे सच्चे देशप्रेमी के रूप में असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है, इसलिए वे सच्चे अर्थों में युग-चारण माने जाते हैं।

प्रमुख काव्य :- मरण ज्वार, माता, समर्पण, युग चरण, इत्यादि।